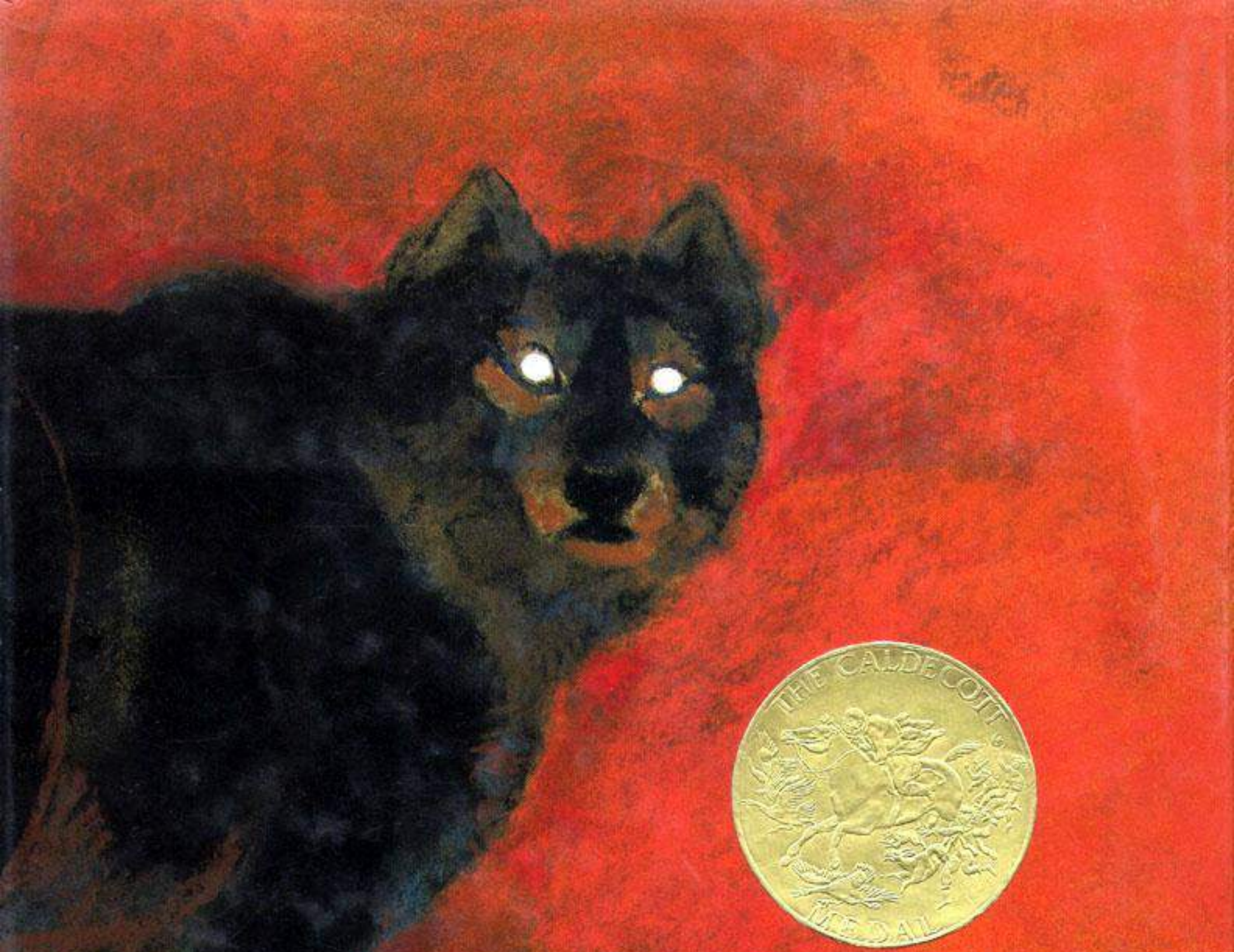

लोन पो पो

चीन की रेड राइडिंग हुड कथा

एड यंग, हिंदी: विदूषक

लोन पो पो

चीन की रेड राइडिंग हुड कथा

एड यंग, हिंदी: विदूषक

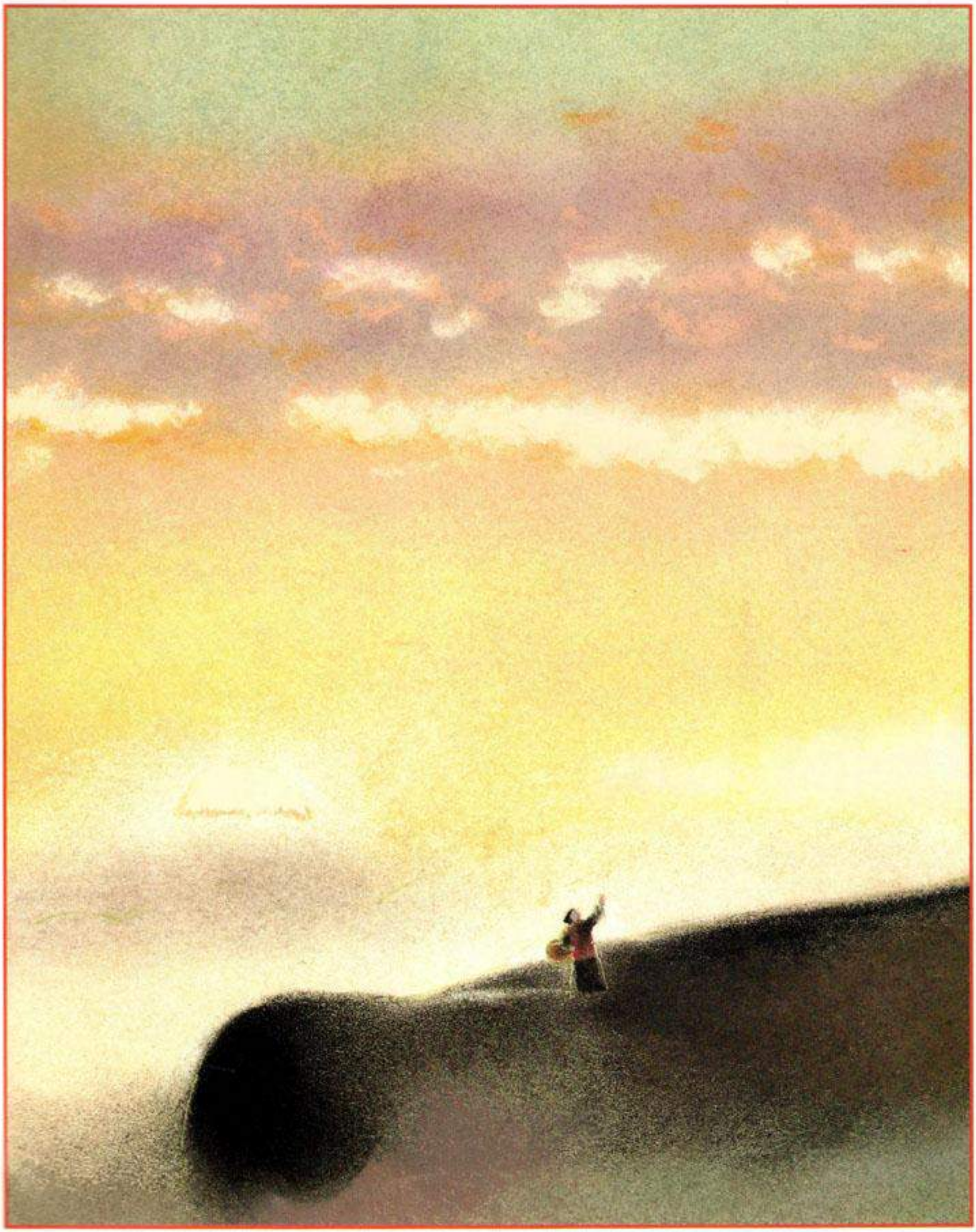

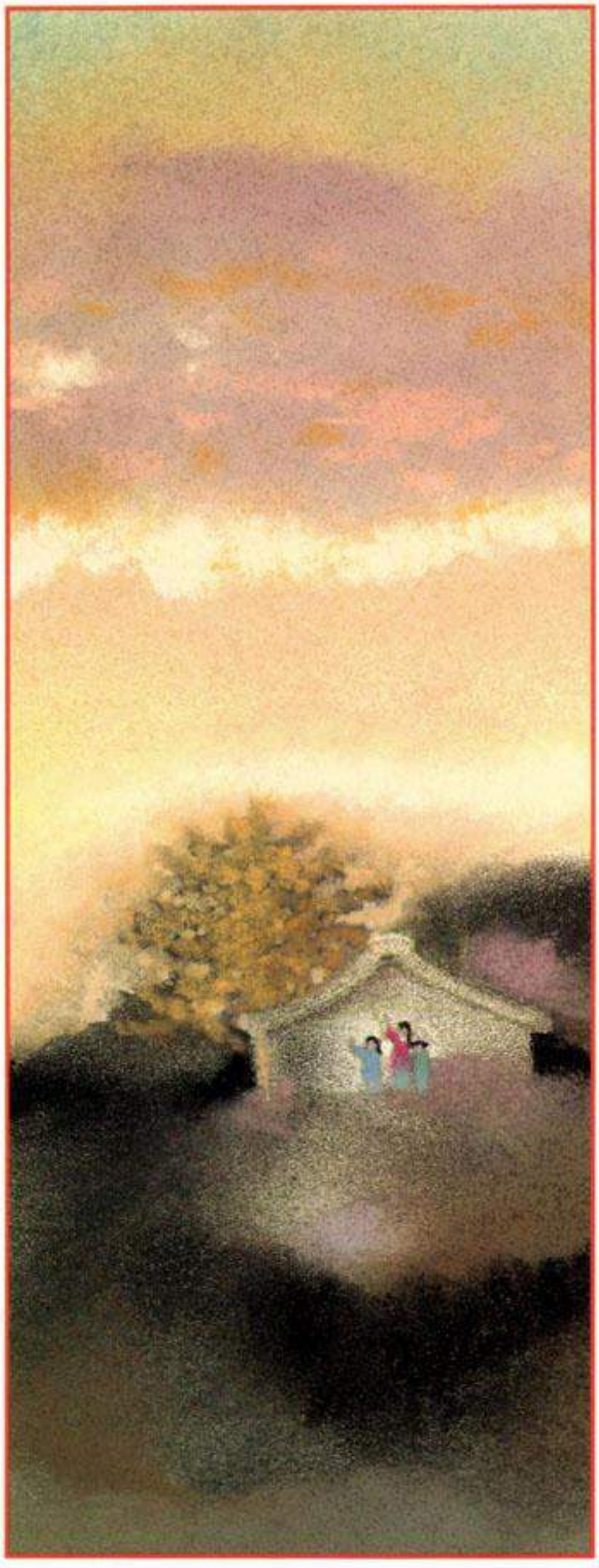

बहुत पहले की बात है. एक औरत, गाँव में अपनी तीन बच्चियों – शांग, टाओ और पोत्ज़े के साथ रहती थी. नानी के जन्मदिन पर माँ ने बच्चियों को घर पर अकेला छोड़ा. फिर वो अपनी माँ से मिलने गई.

घर छोड़ने से पहले उसने बच्चियों से कहा, “मेरे जाने के बाद ज़रा संभल कर रहना, प्यारे बच्चों. मैं रात तक वापिस आ जाऊंगी. शाम ढलते ही अन्दर से दरवाज़ा बंद करके ताला लगा लेना.”

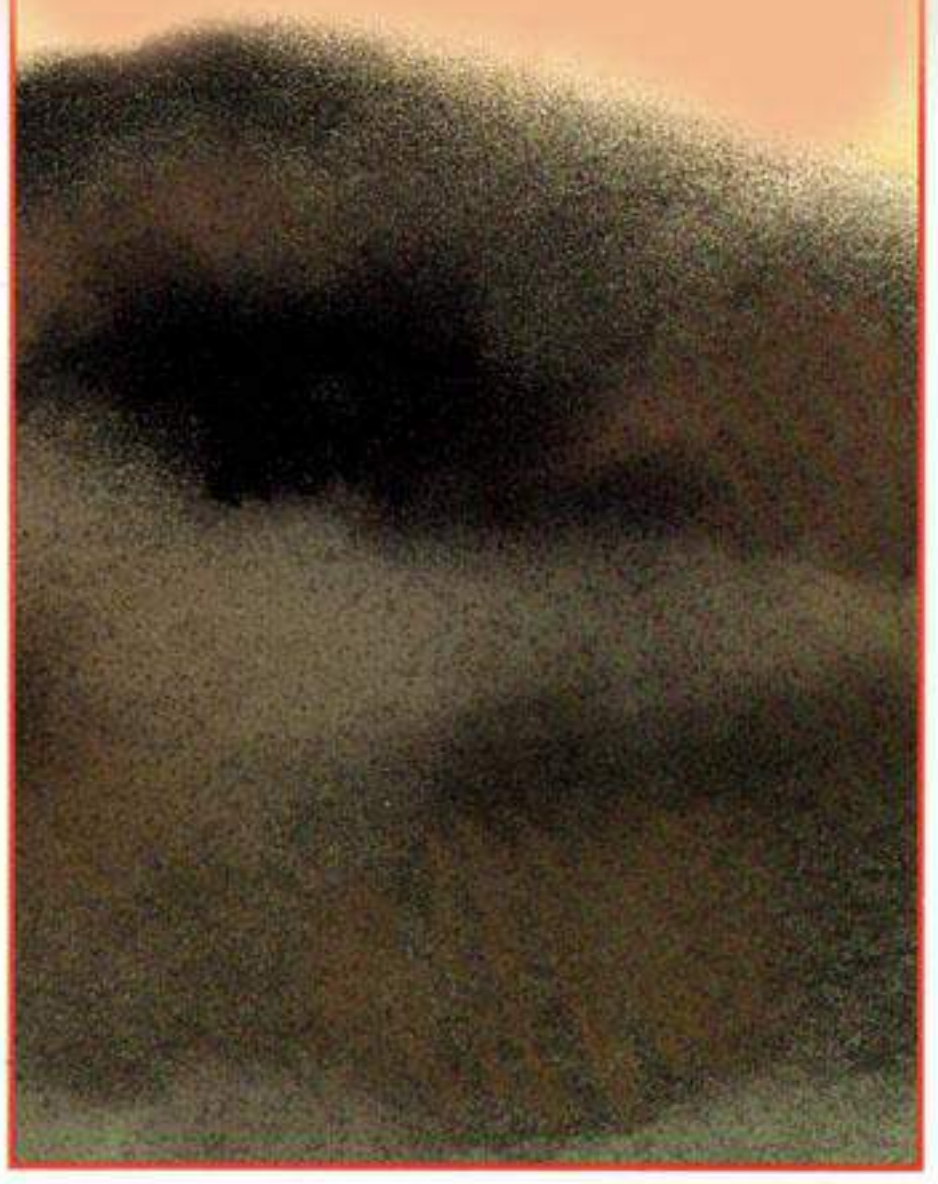

घर के पास में एक बूढ़ा भेड़िया रहता था. उसने औरत को घर से निकलते हुए देखा. भेड़िये ने शाम को एक बूढ़ी औरत का भेष बनाया. फिर उसने बच्चियों के घर के दरवाज़े को दो बार खटखटाया:

ख़ट! ख़ट!

शांग बच्चियों में सबसे बड़ी थी. उस ने बंद दरवाज़े की झिरी में से झाँका और पूछा, "कौन है?"

"मेरे प्यारे बच्चों," भेड़िये ने कहा, "मैं तुम्हारी नानी हूँ – तुम्हारी पो-पो."

"पो-पो!" शांग ने कहा. "हमारी माँ तो आपसे मिलने गई हैं!"

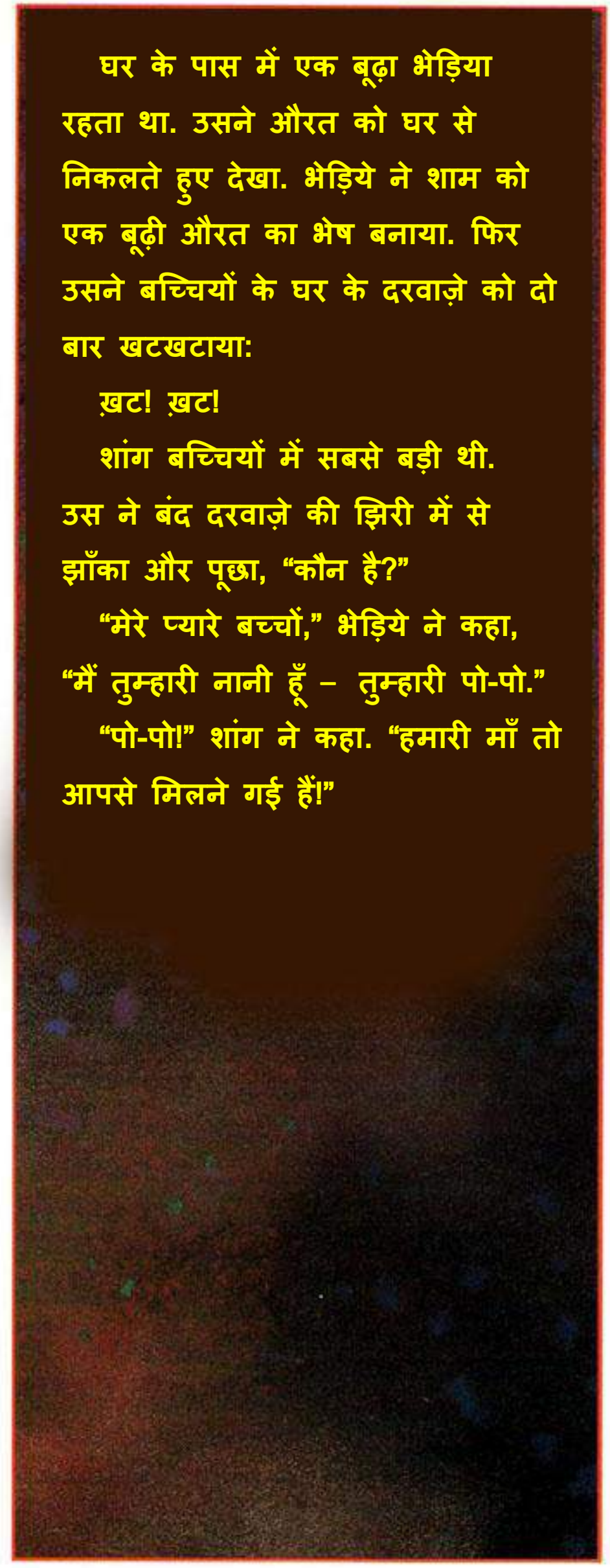

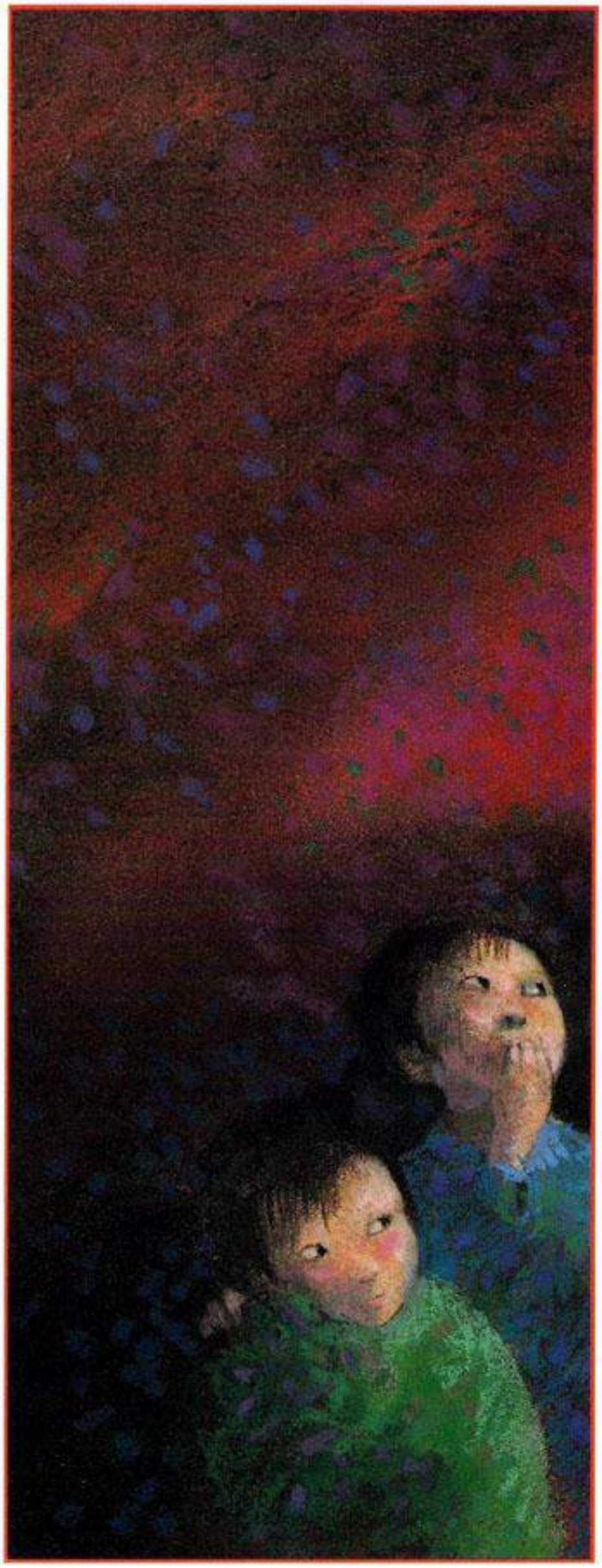

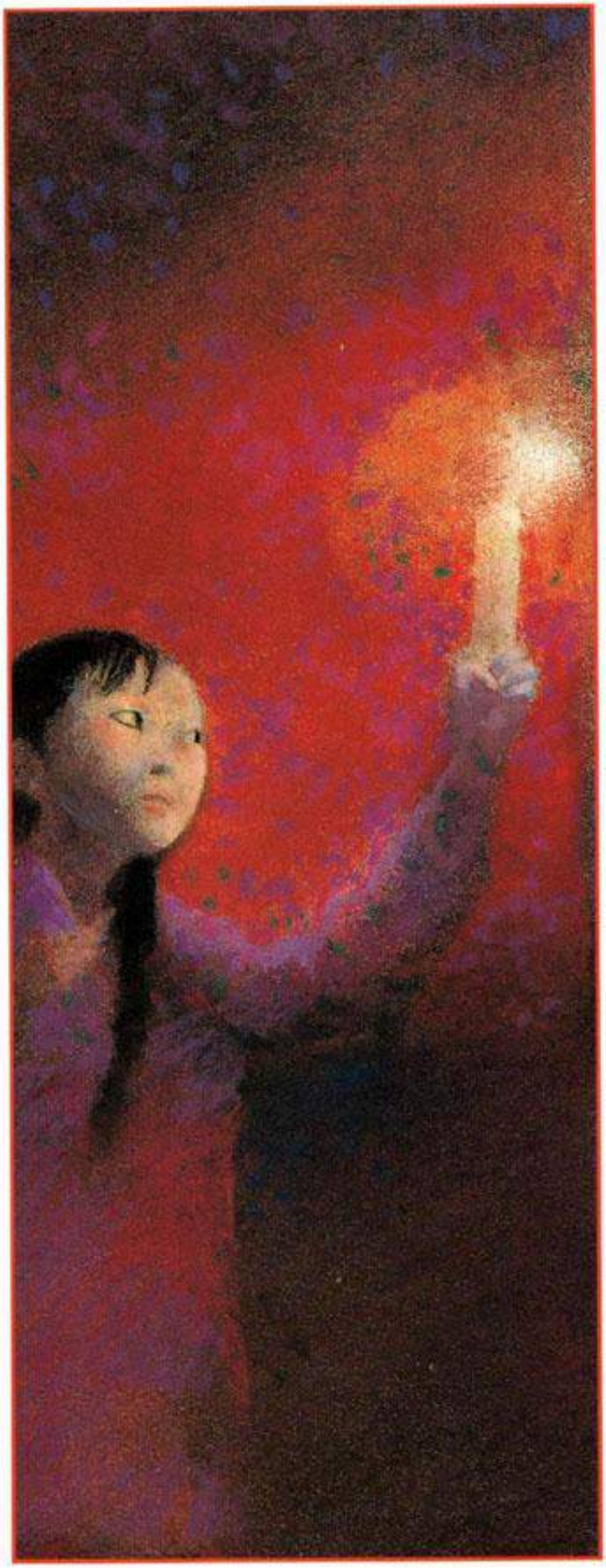

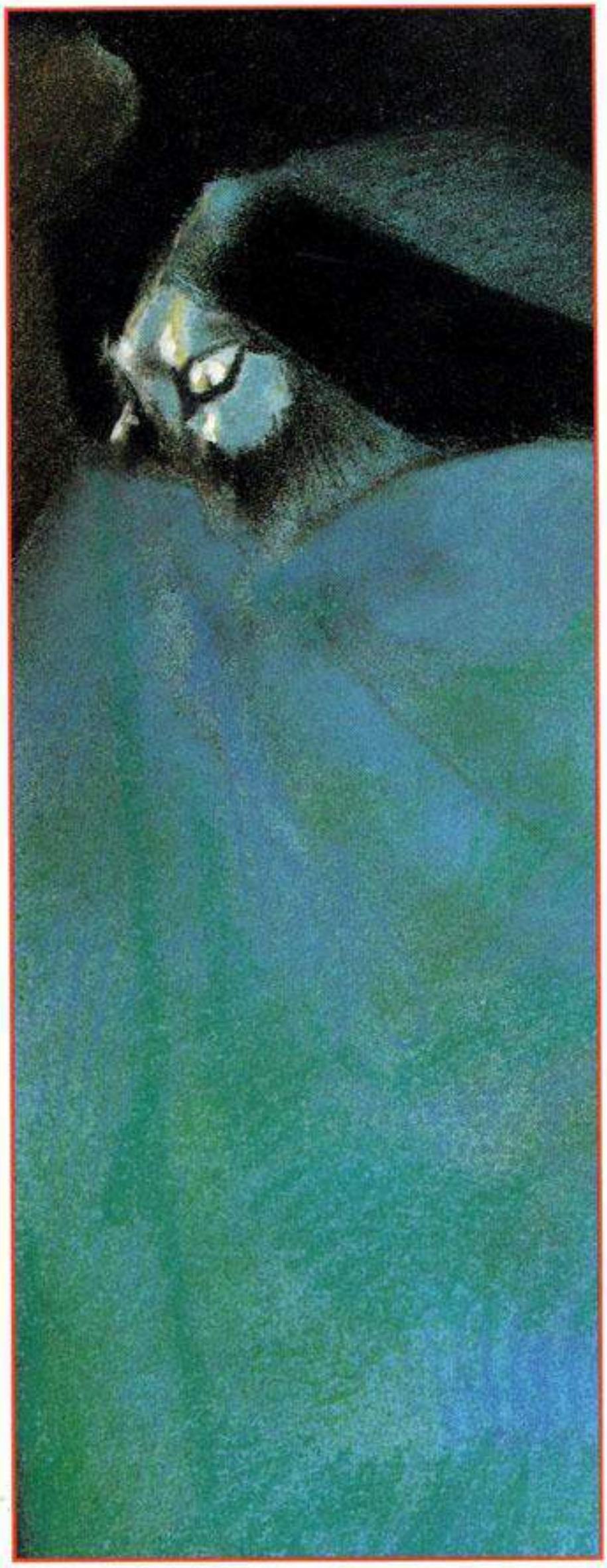

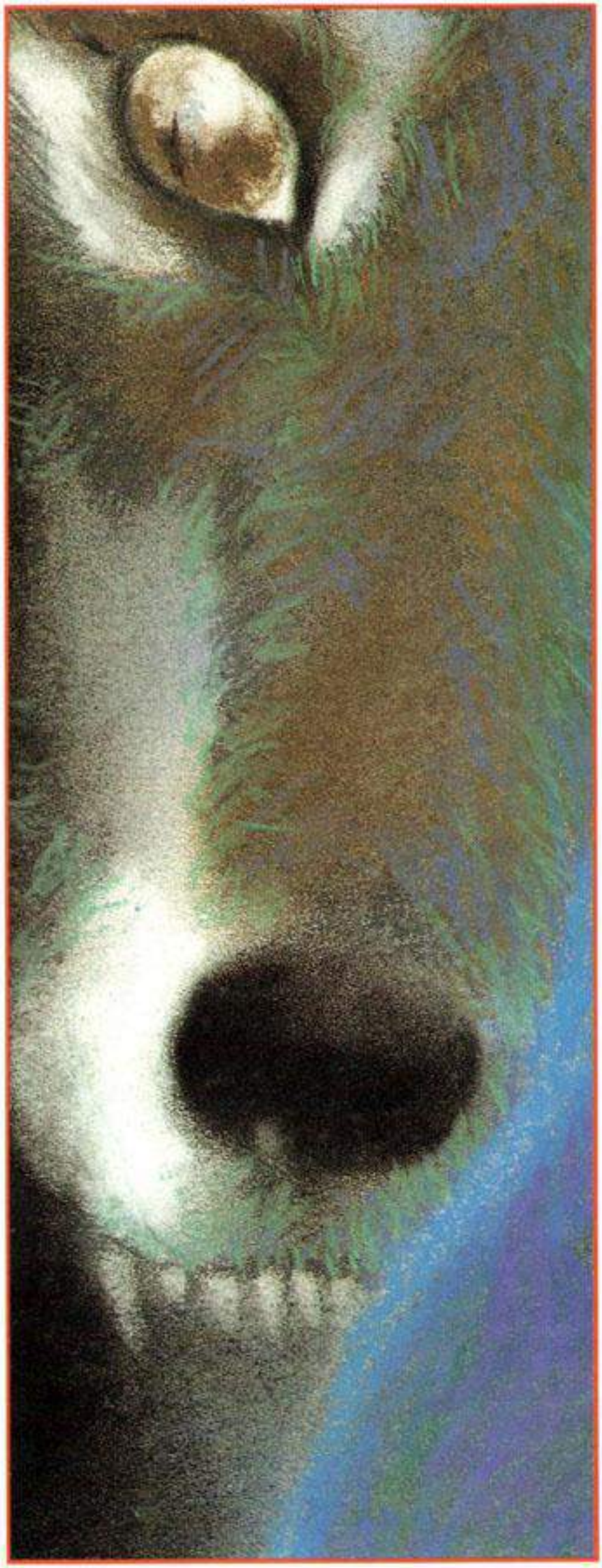

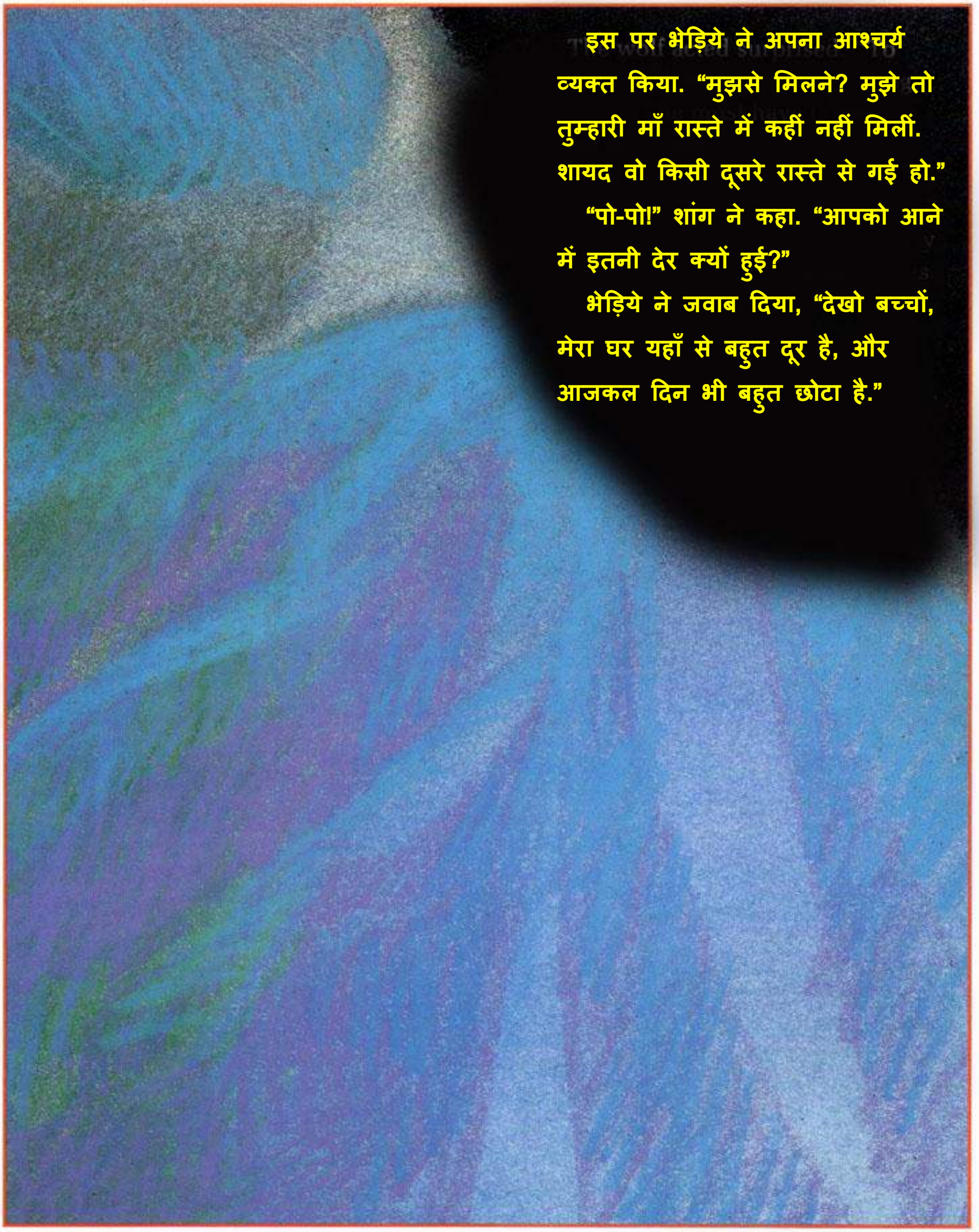

इस पर भेड़िये ने अपना आश्चर्य व्यक्त किया. “मुझसे मिलने? मुझे तो तुम्हारी माँ रास्ते में कहीं नहीं मिलीं. शायद वो किसी दूसरे रास्ते से गई हो.”

“पो-पो!” शांग ने कहा. “आपको आने में इतनी देर क्यों हुई?”

भेड़िये ने जवाब दिया, “देखो बच्चों, मेरा घर यहाँ से बहुत दूर है, और आजकल दिन भी बहुत छोटा है.”

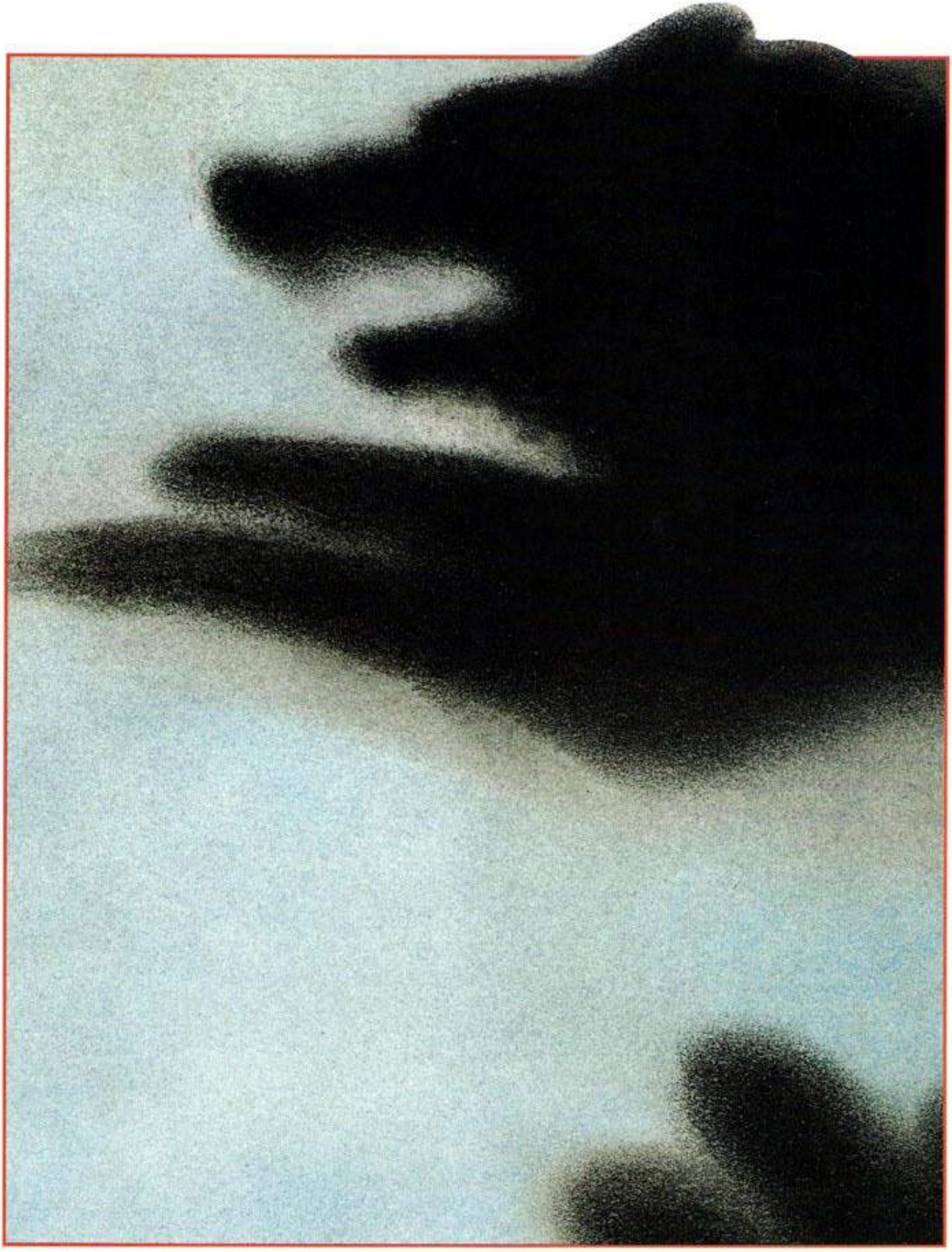

शांग ने दरवाज़े से भेड़िये की बात सुनी.

"पो-पो," उसने पूछा, "आपकी आवाज़ इतनी धीमी क्यों है?"

"तुम्हारी नानी को जुखाम हो गया है. बाहर ठंड भी काफी है और बहुत तेज़ हवा चल रही है. जल्दी से दरवाज़ा खोलो, और अपनी पो-पो को अन्दर आने दो," चालाक भेड़िये ने कहा.

टाओ और पोत्ज़े, नानी से मिलने को बेचैन थे. उनमें से एक ने ताला और दूसरे ने दरवाज़ा खोला. फिर वे चिल्लाये, "पो-पो अन्दर आओ!"

घर में घुसते ही भेड़िये ने जलती हुई मोमबत्ती बुझा दी.

"पो-पो," शांग ने पूछा, "आपने मोमबत्ती क्यों बुझाई? अब कमरे में सिर्फ अँधेरा है, कुछ नहीं दिखता."

भेड़िये ने इसका कोई जवाब नहीं दिया.

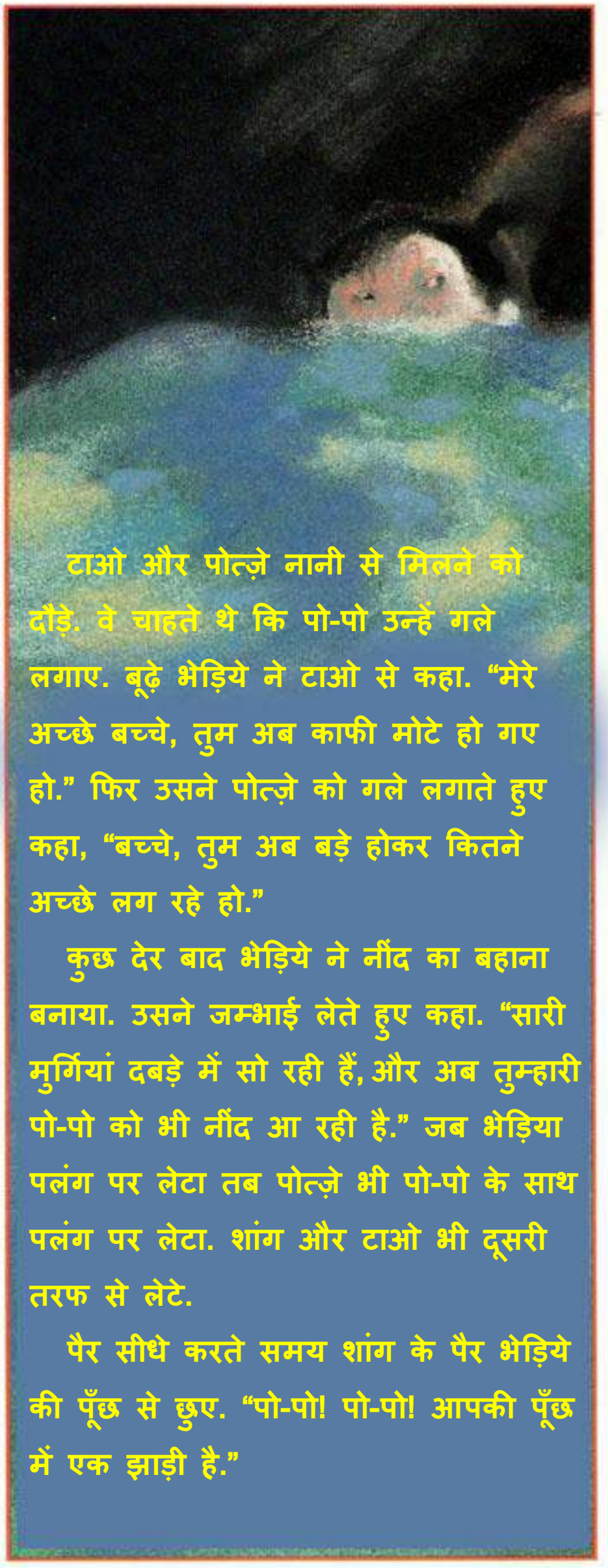

टाओ और पोत्ज़े नानी से मिलने को दौड़े. वे चाहते थे कि पो-पो उन्हें गले लगाए. बूढ़े भेड़िये ने टाओ से कहा. “मेरे अच्छे बच्चे, तुम अब काफी मोटे हो गए हो.” फिर उसने पोत्ज़े को गले लगाते हुए कहा, “बच्चे, तुम अब बड़े होकर कितने अच्छे लग रहे हो.”

कुछ देर बाद भेड़िये ने नींद का बहाना बनाया. उसने जम्भाई लेते हुए कहा. “सारी मुर्गियां दबड़े में सो रही हैं, और अब तुम्हारी पो-पो को भी नींद आ रही है.” जब भेड़िया पलंग पर लेटा तब पोत्ज़े भी पो-पो के साथ पलंग पर लेटा. शांग और टाओ भी दूसरी तरफ से लेटे.

पैर सीधे करते समय शांग के पैर भेड़िये की पूँछ से छुए. “पो-पो! पो-पो! आपकी पूँछ में एक झाड़ी है.”

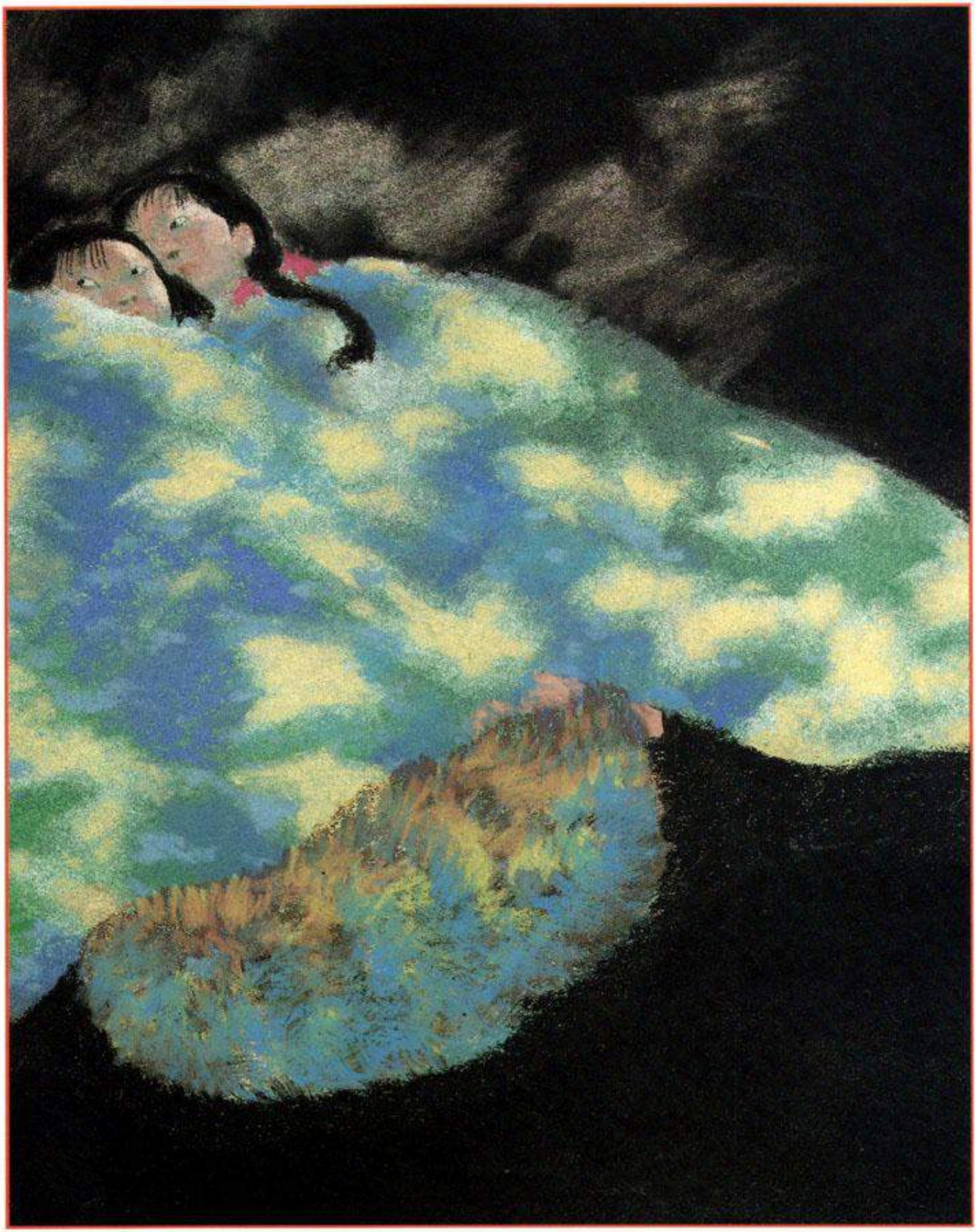

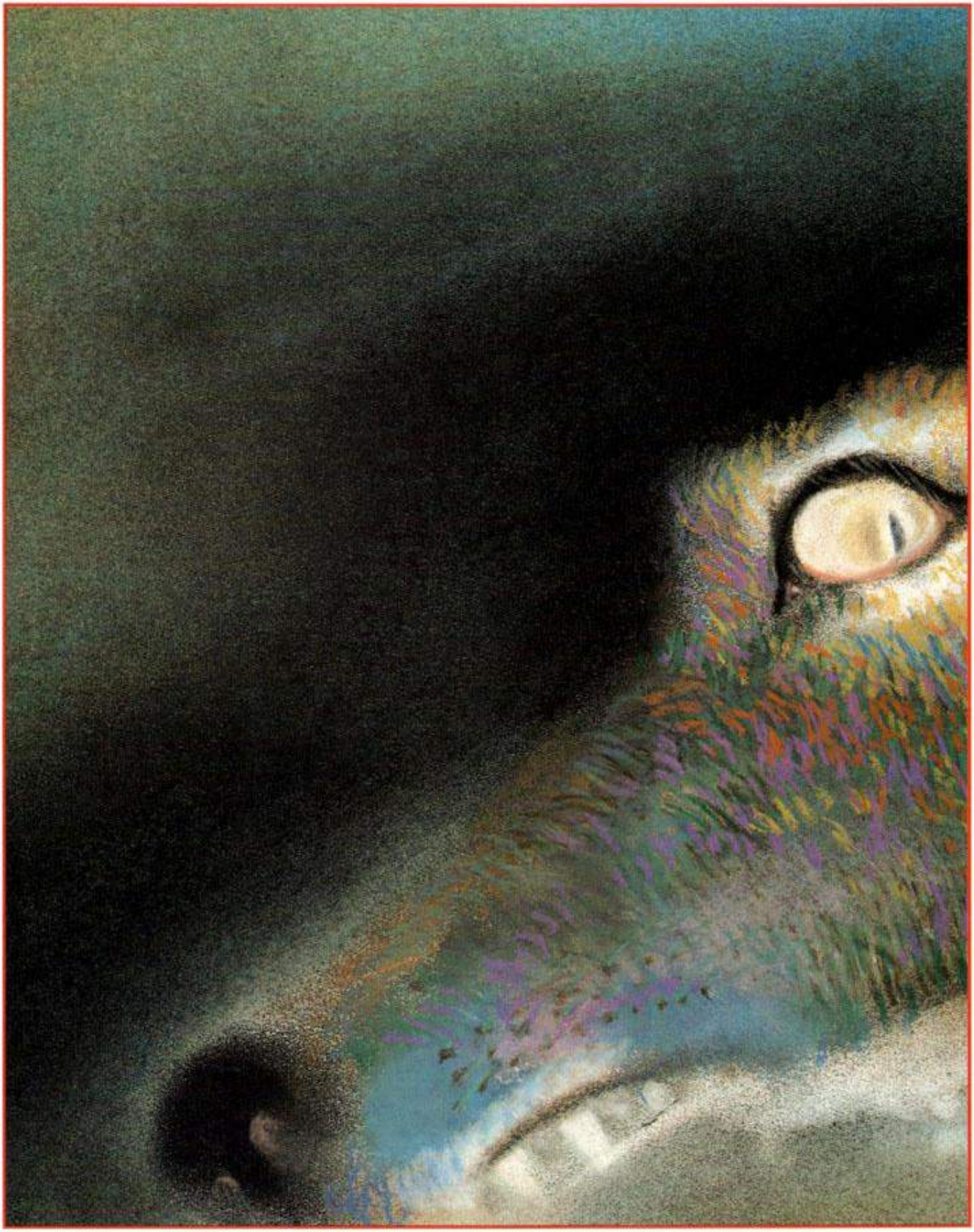

"पो-पो अपने साथ सुतली लाई है, जिससे वो तुम्हारे लिए एक टोकरी बुन सके," भेड़िये ने कहा.

शांग ने नानी के नुकीले पंजों को छुआ और कहा, "पो-पो! पो-पो! आपके हाथों में कांटे है."

"पो-पो अपने साथ सूजा लाई है, जिससे वो तुम्हारे लिए जूते बना सके," भेड़िये ने कहा.

फिर शांग ने तुरंत मोमबत्ती जलाई पर भेड़िये ने उसे झट से बुझा दिया. पर इस बीच, शांग को, भेड़िये का बालों से ढंका चेहरा दिख गया.

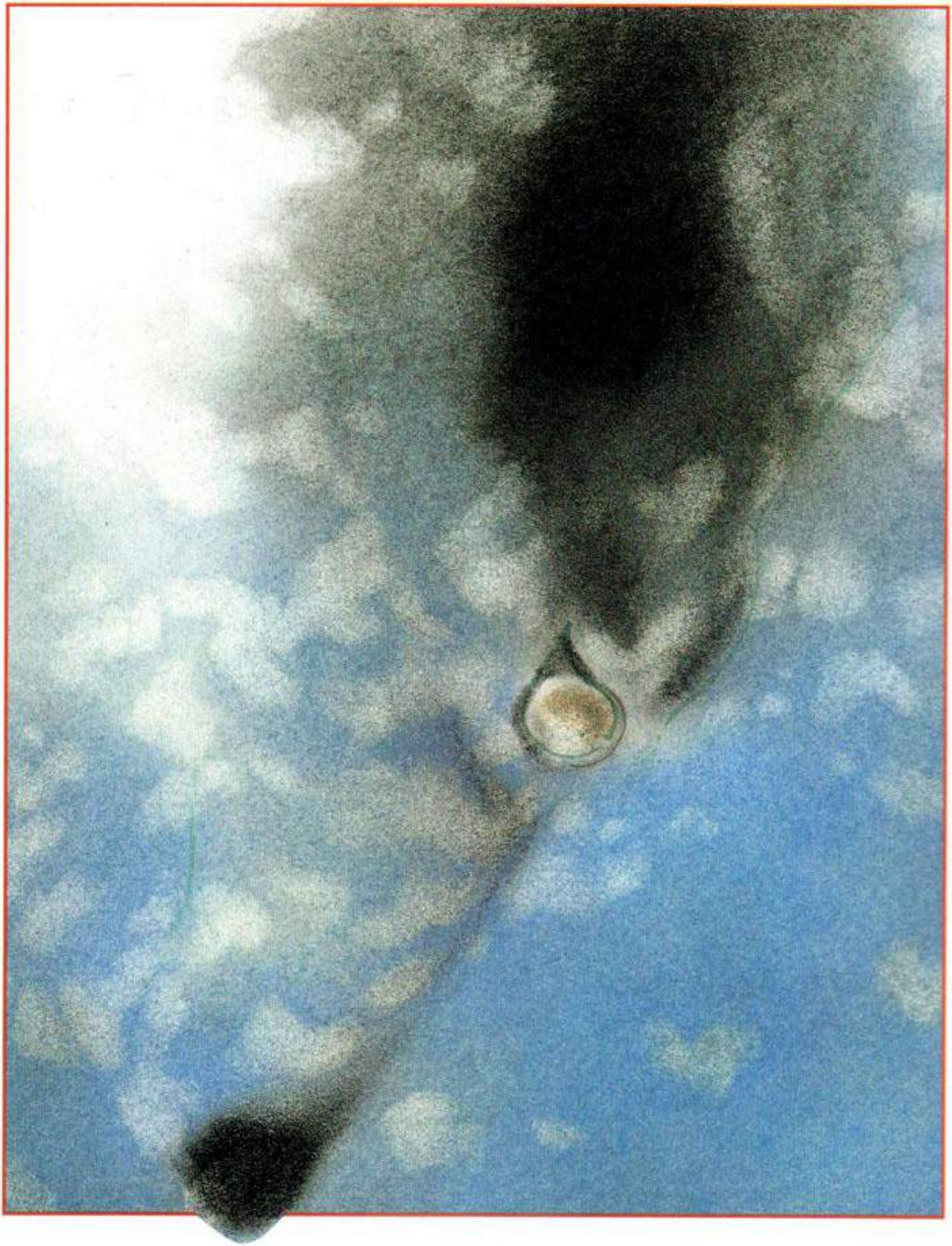

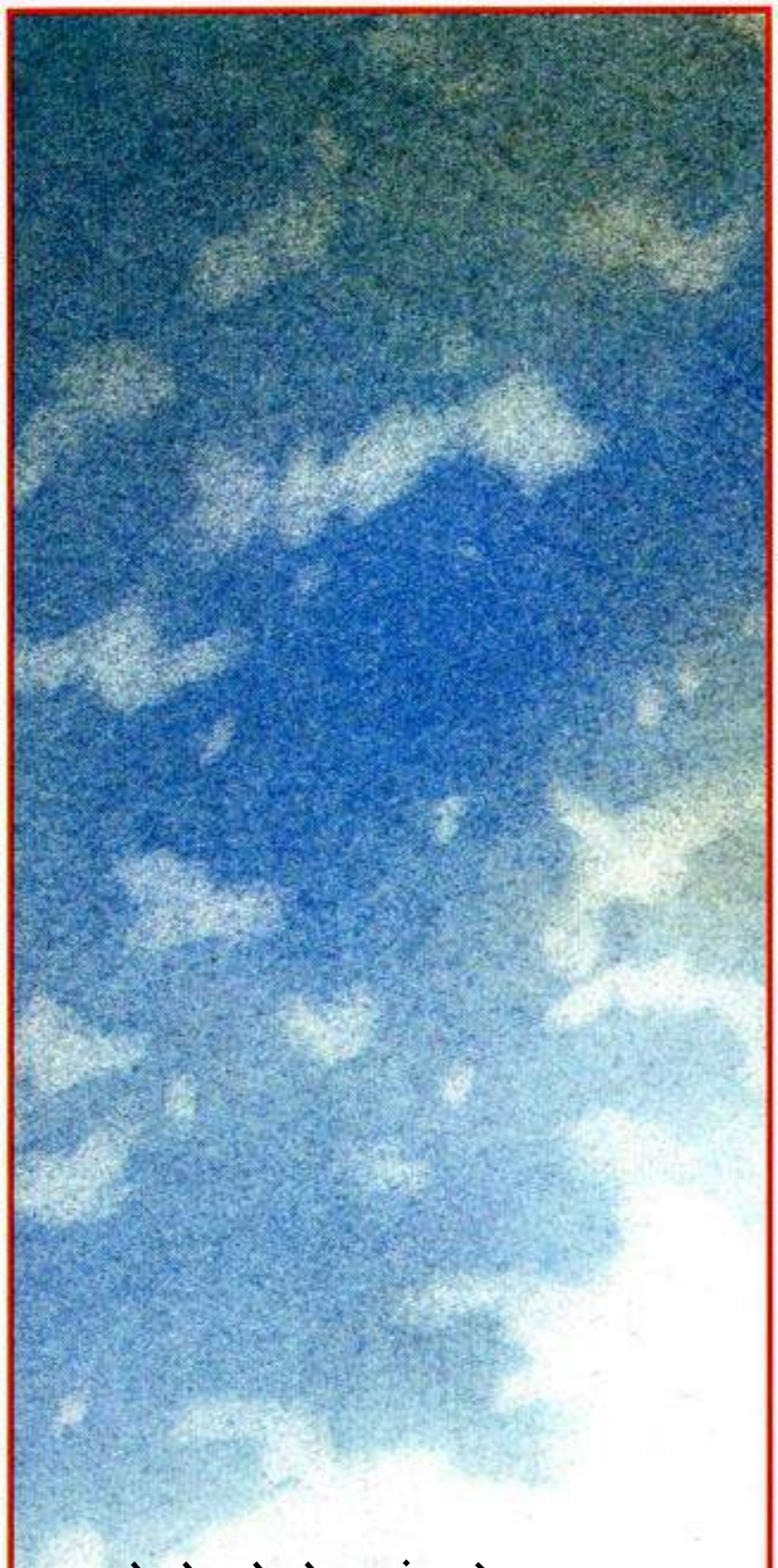

"पो-पो, पो-पो," शांग ने कहा, क्योंकि वो तीनों बच्चियों में सबसे बड़ी और सबसे होशियार थी, "आपको बहुत भूख लगी होगी. क्या कभी आपने गिंको पेड़ के फल खाए हैं?"

"यह गिंको क्या चीज़ है?" भेड़िये ने पूछा.

"गिंको के फल एकदम मुलायम और नाज़ुक होते हैं, बिल्कुल एक शिशु की त्वचा जैसे. अगर आपने एक बार उन्हें खाया फिर आप सदा के लिए अमर हो जाएँगी," शांग ने कहा. "गिंको के फल, पेड़ के सबसे ऊपर वाले हिस्से में ही लगते हैं. और हाँ, गिंको का पेड़ तो हमारे दरवाज़े के बिल्कुल सामने है."

यह सुनने के बाद भेड़िये ने एक लम्बी सांस ली और कहा, "देखो बेटा, अब तुम्हारी पो-पो बूढ़ी हो चली है. उसकी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं. उससे अब पेड़ पर चढ़ा नहीं जाता है."

"कोई बात नहीं पो-पो, हम लोग आपके लिए गिंको के फल तोड़ कर लाएंगे," शांग ने कहा.

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ.

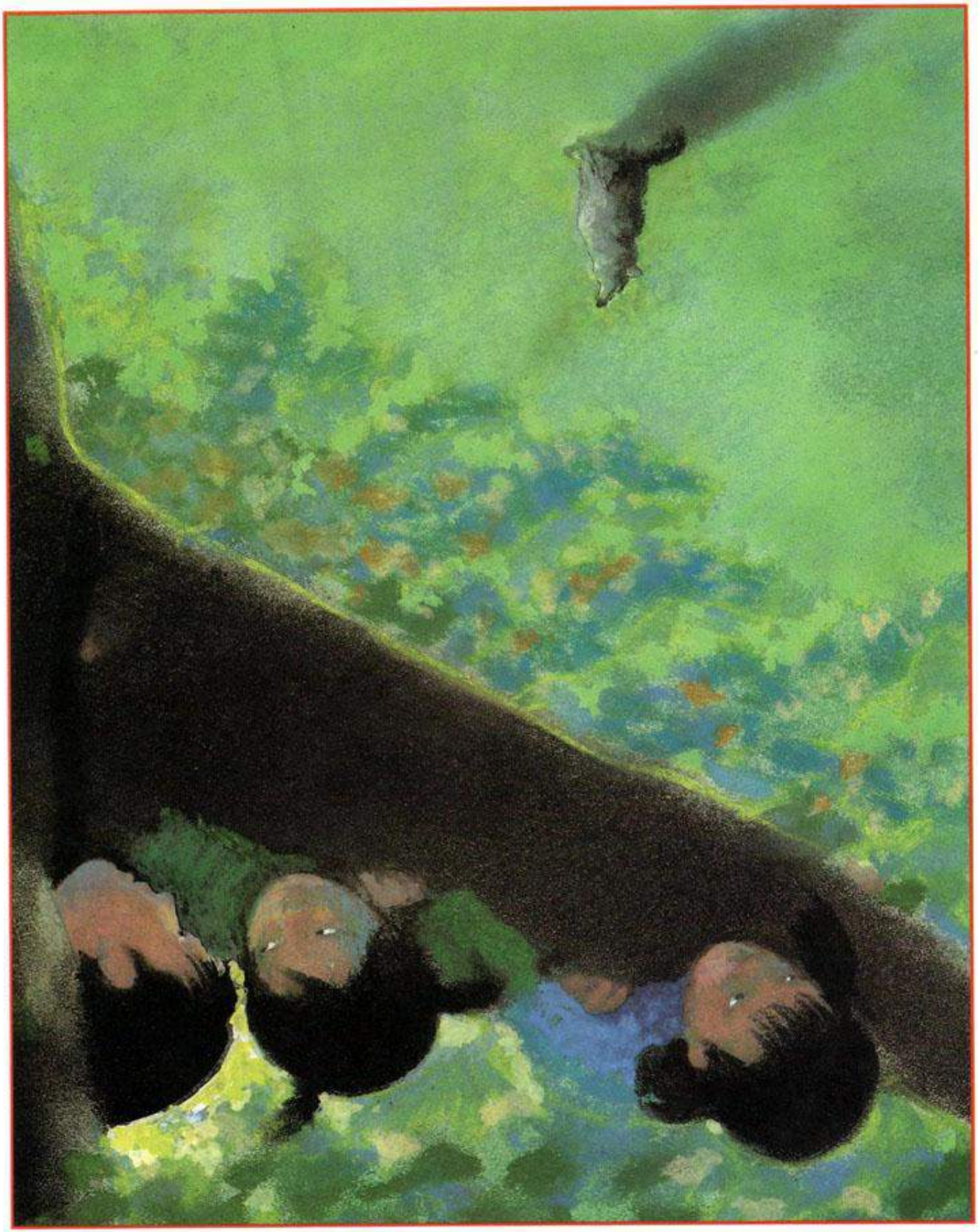

उसके बाद शांग पलंग से नीचे कूदा. उसके पीछे-पीछे टाओ और पोत्ज़े भी गिंको के पेड़ के पास आए. पेड़ ने नीचे शांग ने अपनी दोनों छोटी बहनों को भेड़िये के बारे में बताया. उसके बाद तीनों लड़कियां, गिंको के पेड़ पर चढ़ीं.

भेड़िये ने बहुत देर तक उनका इंतज़ार किया पर मोटी शांग फिर वापिस नहीं आई. पोत्ज़े भी वापिस नहीं आई. शांग, उसके लिए गिंको के पेड़ के फल भी नहीं लाई. अंत में भेड़िया चिल्लाया, “तुम कहाँ गए बच्चों?”

“पो-पो,” शांग ने पेड़ के ऊपर से जवाब दिया, “हम लोग पेड़ के ऊपर गिंको के फल खा रहे हैं.”

“अच्छे बच्चों,” भेड़िये ने भीख मांगते हुए कहा, “कुछ फल मेरे लिए भी तोड़ो.”

“देखो पो-पो, गिंको का जादू तभी काम करता है जब फलों को पेड़ से सीधे तोड़कर खाया जाए. आपको ऊपर आकर, खुद फल तोड़ने होंगे.”

फिर भेड़िया बाहर आया और पेड़ के नीचे लेफ्ट-राईट करता रहा. उसे पेड़ पर बच्चों द्वारा गिंको के फल खाने की आवाज़ आ रही थी.

"अरे पो-पो, यह फल इतने स्वादिष्ट हैं! उनका गूदा एकदम नर्म है," शांग ने कहा. यह सुनकर भेड़िये की लार टपकने लगी.

अंत में शांग जो उम्र में सबसे बड़ी और होशियार थी ने कहा, "पो-पो, मेरे दिमाग में एक योजना है. दरवाज़े के पास एक बड़ी टोकरी रखी है. उसके पास लम्बी रस्सी भी है. आप टोकरी में रस्सी बांधें, और फिर खुद टोकरी में बैठें. उसके बाद रस्सी के दूसरे सिरे को मेरी तरफ फेंकें. मैं आपको ऊपर खीचूंगी."

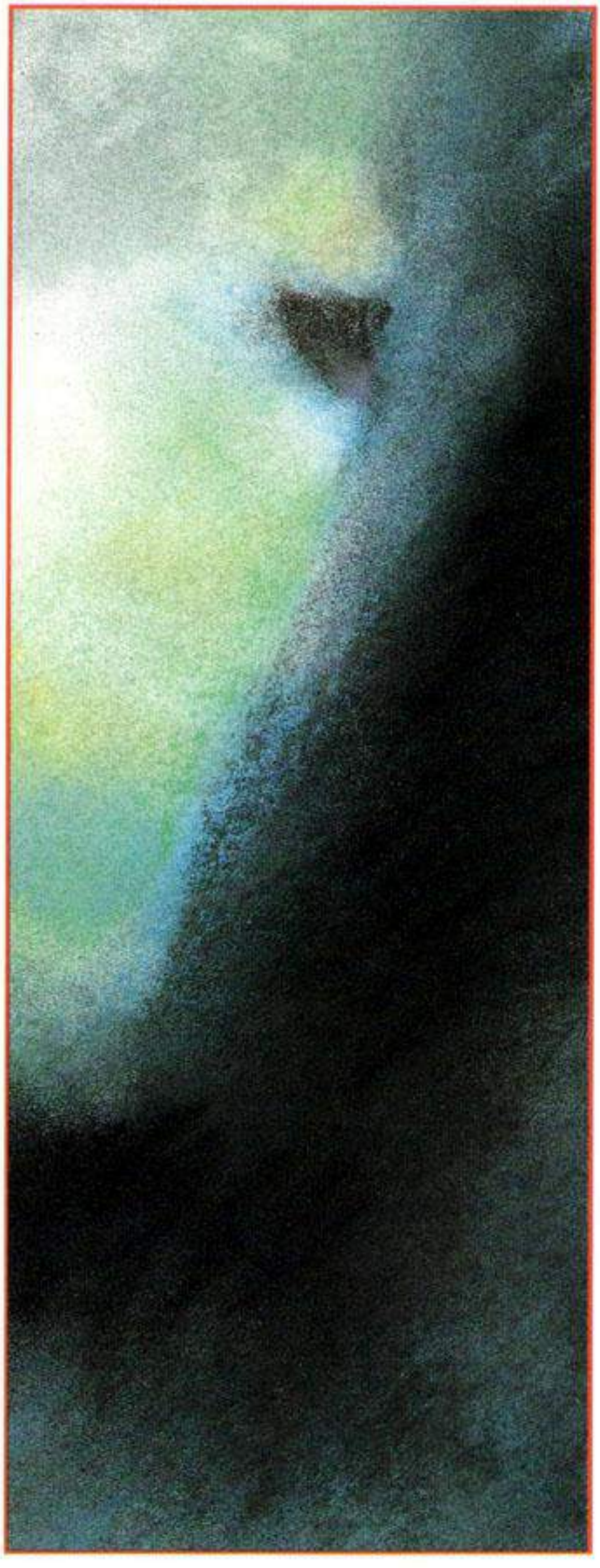

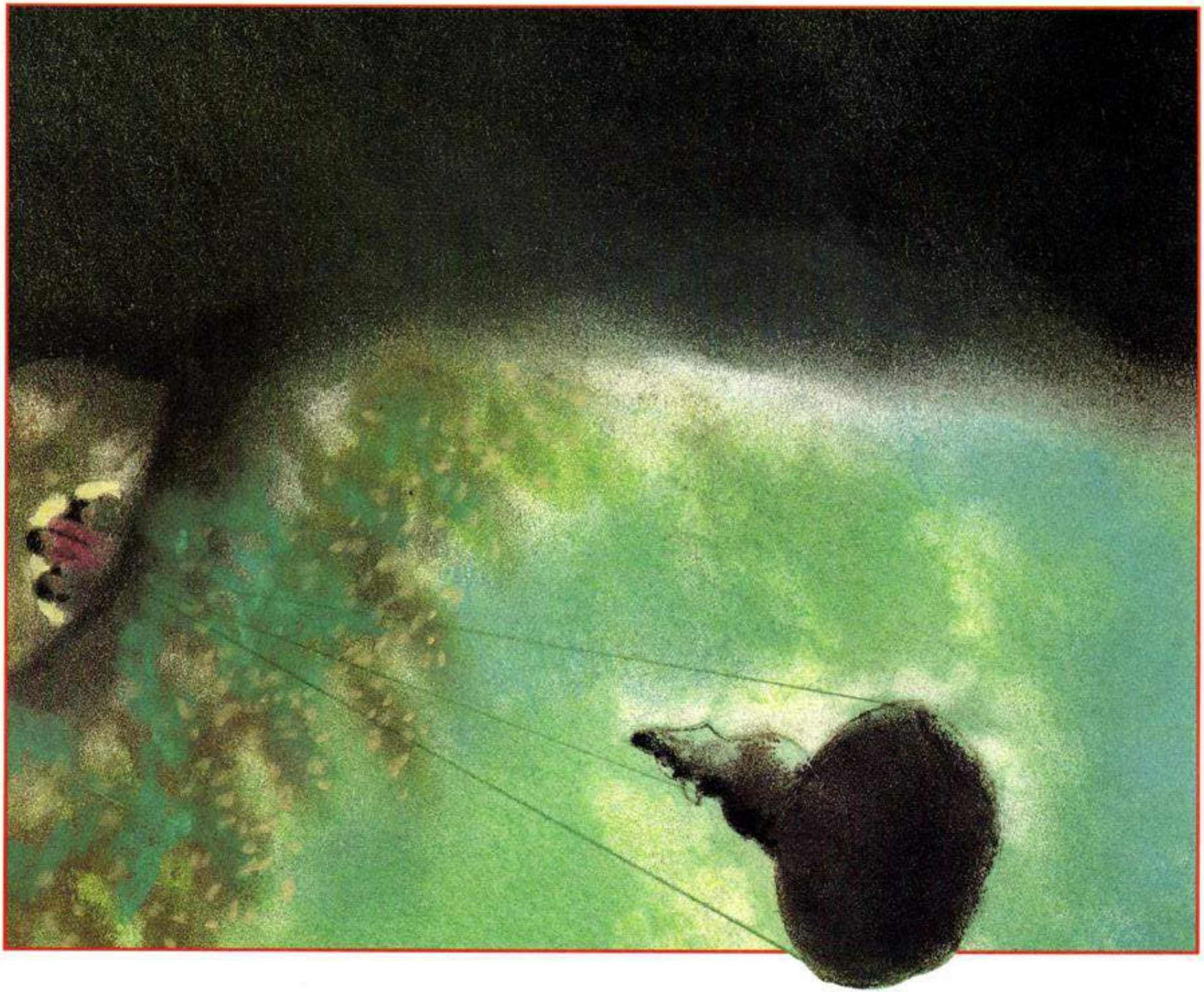

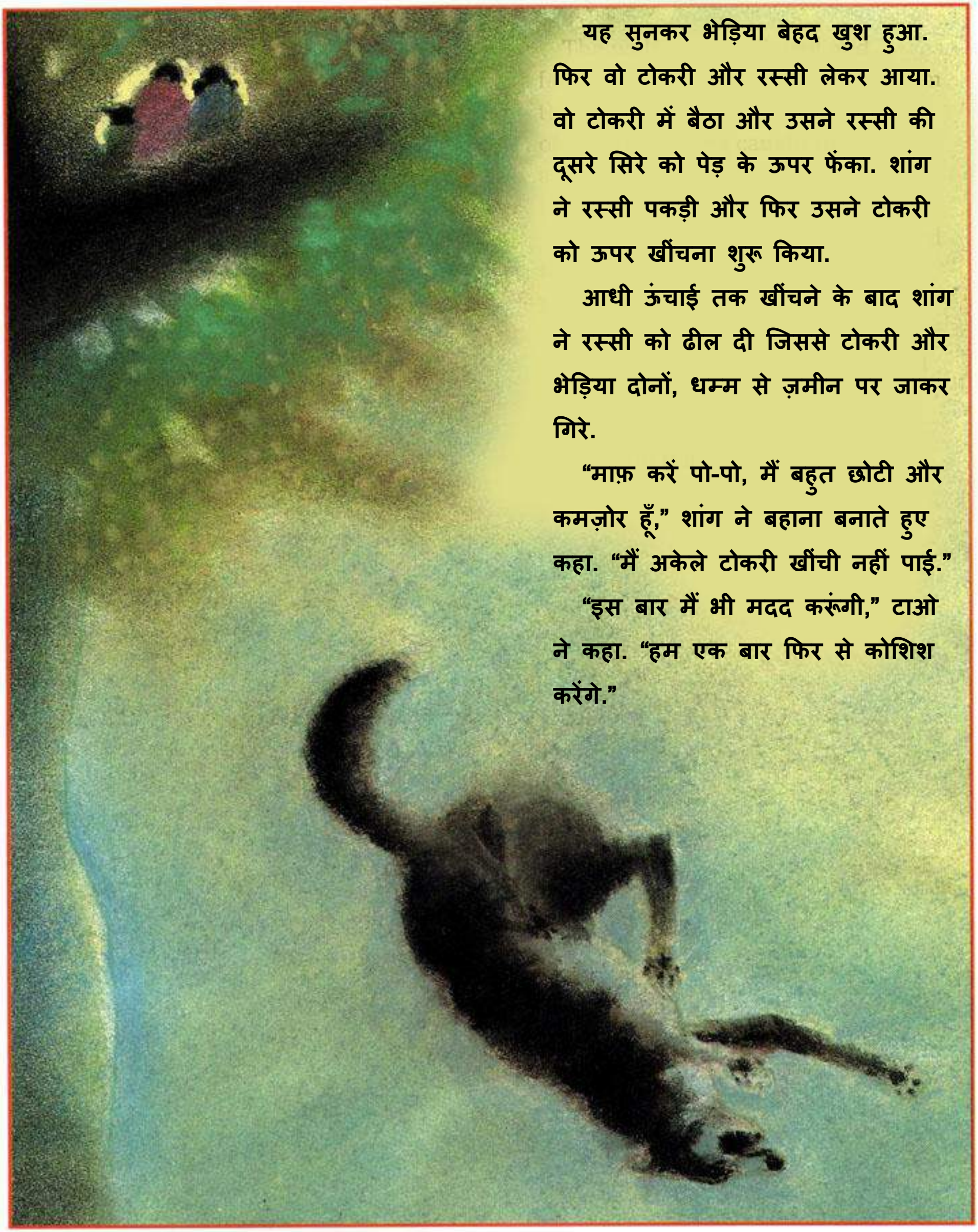

यह सुनकर भेड़िया बेहद खुश हुआ. फिर वो टोकरी और रस्सी लेकर आया. वो टोकरी में बैठा और उसने रस्सी की दूसरे सिरे को पेड़ के ऊपर फेंका. शांग ने रस्सी पकड़ी और फिर उसने टोकरी को ऊपर खींचना शुरू किया.

आधी ऊंचाई तक खींचने के बाद शांग ने रस्सी को ढील दी जिससे टोकरी और भेड़िया दोनों, धम्म से ज़मीन पर जाकर गिरे.

"माफ़ करें पो-पो, मैं बहुत छोटी और कमज़ोर हूँ," शांग ने बहाना बनाते हुए कहा. "मैं अकेले टोकरी खींची नहीं पाई."

"इस बार मैं भी मदद करूंगी," टाओ ने कहा. "हम एक बार फिर से कोशिश करेंगे."

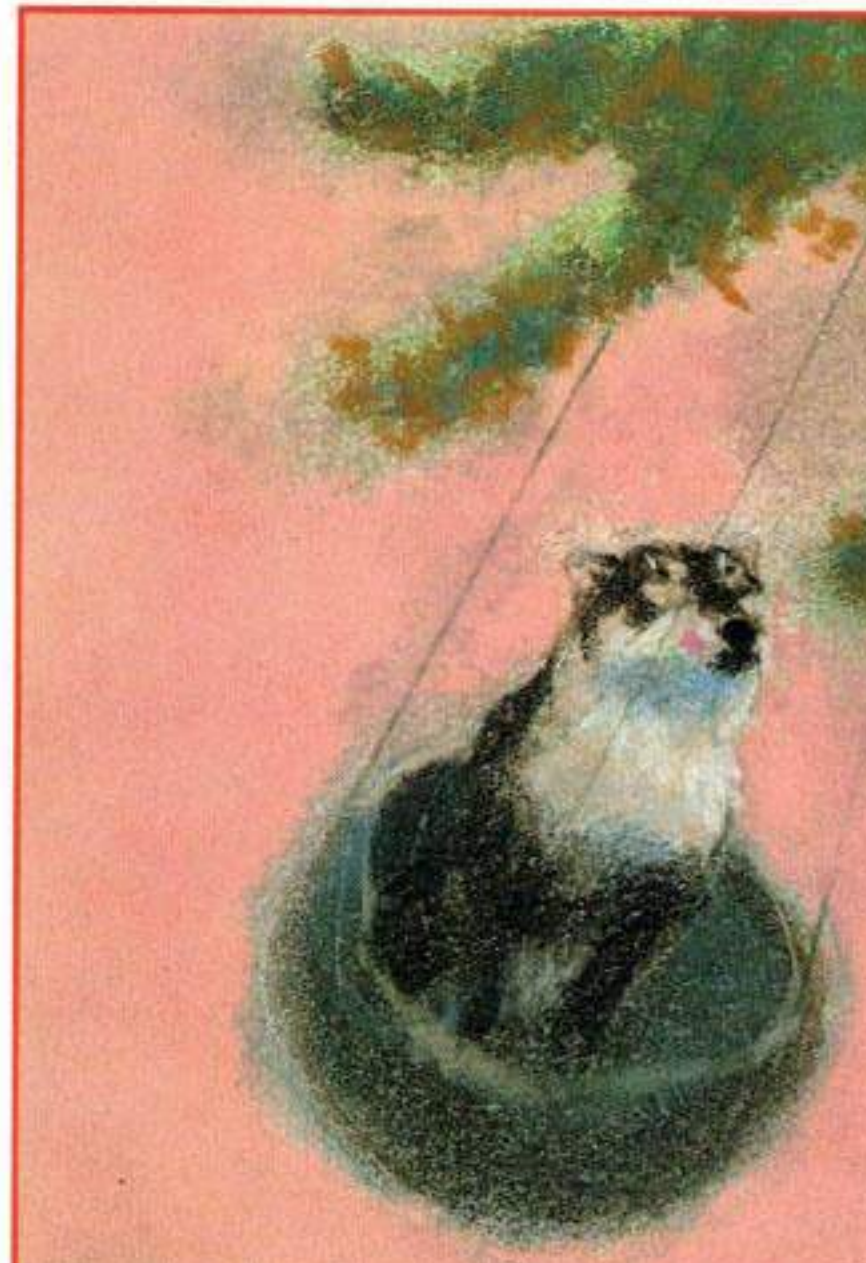

भेड़िये के दिमाग में एक ही बात घूम रही थी. वो किसी भी हालत में गिंको के फल चखना चाहता था. अब एक बार दुबारा शांग और टाओ ने मिलकर टोकरी को रस्सी से खींचा. उन्होंने बहुत कोशिश करके टोकरी को पेड़ की आधी ऊंचाई तक खींचा.

फिर उन्होंने दुबारा रस्सी को ढीला छोड़ा जिससे भेड़िया दुबारा धम्म से, ज़मीन पर जाकर गिरा. इस बार उसका सिर ज़मीन से टकराया.

चोट लगने के बाद भेड़िये को बहुत गुस्सा आया. वो चीखा-चिल्लाया, ज़ोरों से घुर्राया.

“पो-पो, हमें माफ़ करो, हम भारी टोकरी को खींच नहीं पाए,” शांग ने कहा, “पर एक गिंको का फल खाकर आप एकदम भली-चंगी हो जाएँगी.”

“इस बार रस्सी खींचने में मैं भी अपनी बहनों का हाथ बटाऊँगी,” पोत्ज़े – सबसे छोटी बच्ची ने कहा. “इस बार हम ज़रूर सफल होंगे.”

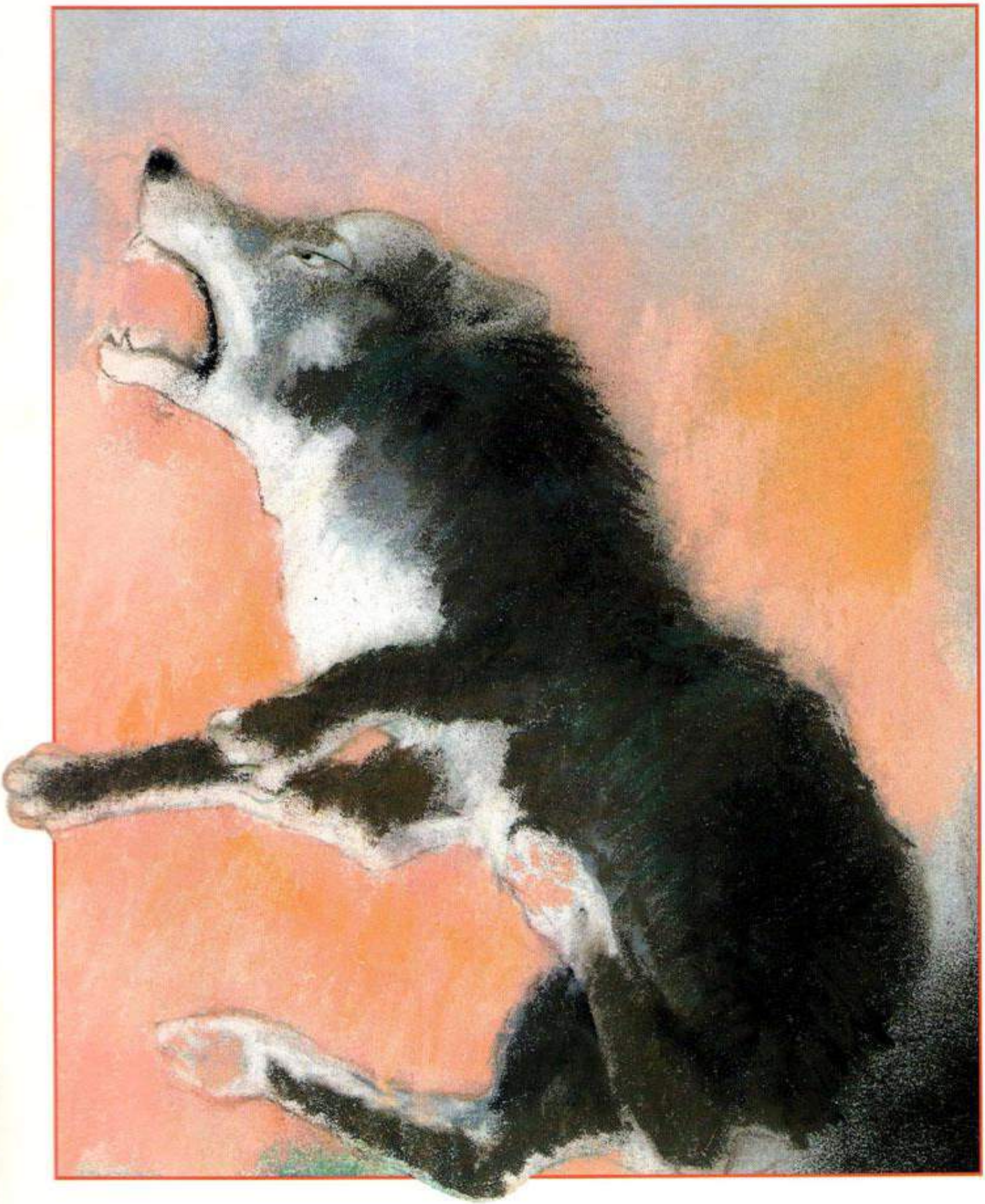

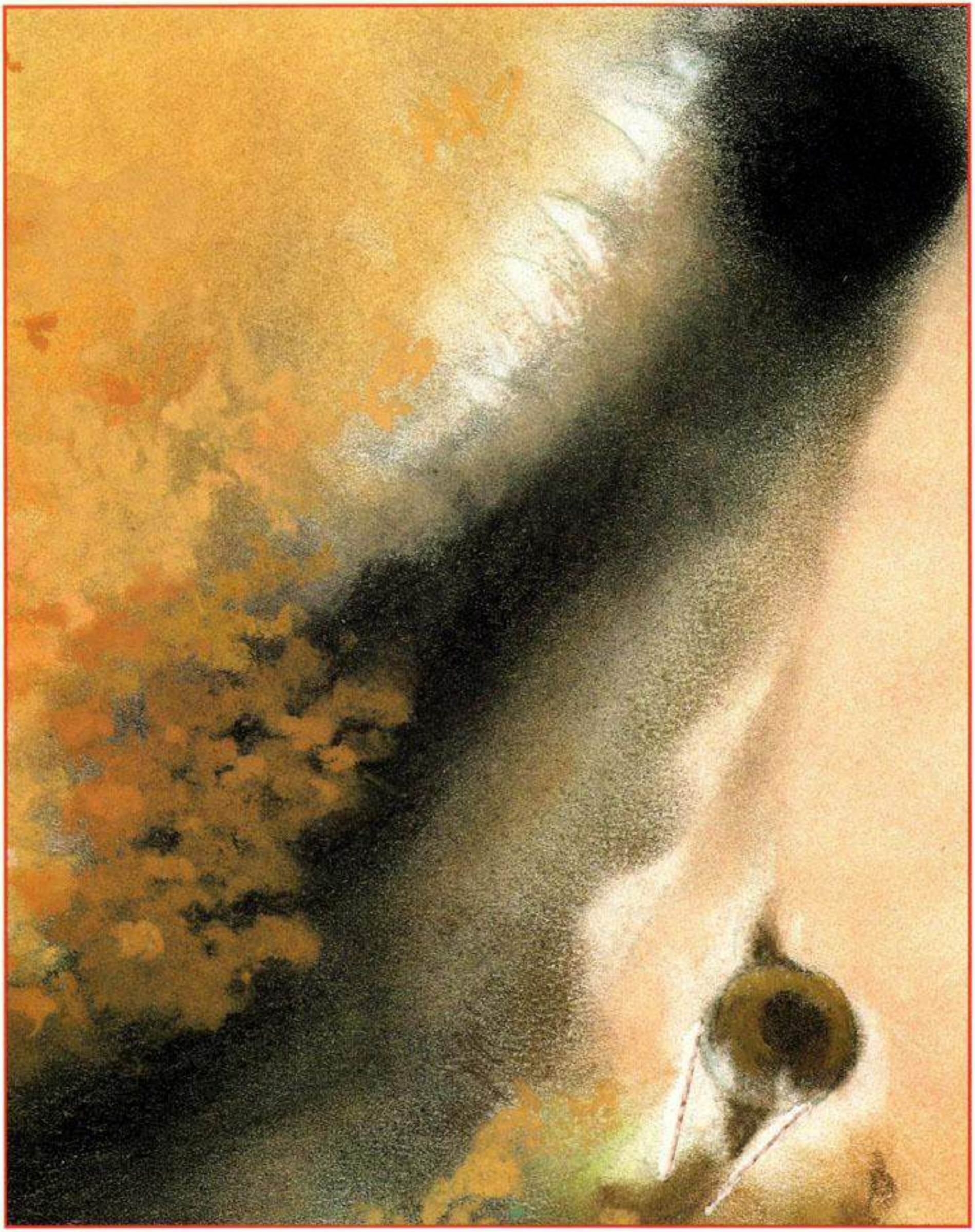

तीसरी बार बच्चों ने पूरा दम लगाकर रस्सी को खींचा. रस्सी खींचते समय उन्होंने “जोर लगाकर हईया,” का एक-साथ नारा भी लगाया. धीरे-धीरे टोकरी ऊपर उठी, पहली बार से ऊपर, फिर दूसरी बार से भी ऊपर. अंत में टोकरी लगभग पेड़ की चोटी तक पहुंची. अब भेड़िया अपने हाथों से पेड़ की सबसे ऊंची टहनी को छू सकता था.

पर उसी क्षण शांग खांसा, और फिर उन तीनों लड़कियों ने रस्सी छोड़ दी. फिर टोकरी बहुत तेज़ी से नीचे जाकर गिरी. इस बार न सिर्फ भेड़िये के सिर को चोट लगी पर उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो गए.

“पो-पो,” शांग जोर से चिल्लाई,
पर उसे कोई उत्तर नहीं मिला.
“पो-पो,” फिर टाओ चिल्लाई,
पर उसे भी कोई उत्तर नहीं मिला.
“पो-पो,” अंत में पोत्ज़े चिल्लाई.
इस बार भी उन्हें कोई जवाब नहीं
मिला. फिर बच्चे कुछ नीचे उतरे.
उन्होंने भेड़िये के बिल्कुल ऊपर वाली
टहनी से साफ़ देखा कि भेड़िया
सचमुच में मर गया था. उसके बाद ही
वे तीनों पेड़ से उतरे. फिर तीनों घर
के अन्दर गए और दरवाज़े का ताला
लगाकर चैन की नींद सोए.